बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम **दिनांक – 14- 03-2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज प्रायश्चित्त कहानी के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

लेखक: भगवतीचरण वर्मा

अगर कबरी बिल्ली घर-भर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से, और अगर रामू की बहू घर-भर में किसी से घृणा करती थी, तो कबरी बिल्ली से. रामू की बहू, दो महीने हुए मायके से प्रथम बार ससुराल आई थी, पति की प्यारी और सास की दुलारी, चौदह वर्ष की बालिका. भंडार-घर की चाभी उसकी करधनी में लटकने लगी, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा, और रामू की बहू घर में सब कुछ. सासजी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया.

लेकिन ठहरी चौदह वर्ष की बालिका, कभी भंडार-घर खुला है, तो कभी भंडार-घर में बैठे-बैठे सो गई. कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर अब वह जुट गई. रामू की बहू की जान आफ़त में और कबरी बिल्ली के छक्के पंजे. रामू की बहू हांडी में घी रखते-रखते ऊंघ गई और बचा हुआ घी कबरी के पेट में. रामू की बहू दूध ढककर मिसरानी को जिंस देने गई और दूध नदारद. अगर बात यहीं तक रह जाती, तो भी बुरा न था, कबरी रामू की बहू से कुछ ऐसा परच गई थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार. रामू की बहू के कमरे में रबड़ी से भरी कटोरी पहुंची और रामू जब आए तब तक कटोरी साफ़ चटी हुई. बाज़ार से बालाई आई और जब तक रामू की बहू ने पान लगाया बालाई ग़ायब.

रामू की बहू ने तय कर लिया कि या तो वही घर में रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही. मोर्चाबंदी हो गई, और दोनों सतर्क. बिल्ली फंसाने का कठघरा आया, उसमें दूध मलाई, चूहे, और भी बिल्ली को स्वादिष्ट लगनेवाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गए, लेकिन बिल्ली ने उधर निगाह तक न डाली. इधर कबरी ने सरगर्मी दिखलाई. अभी तक तो वह रामू की बहू से डरती थी; पर अब वह साथ लग गई, लेकिन इतने फासिले पर कि रामू की बहू उस पर हाथ न लगा सके. कबरी के हौसले बढ़ जाने से रामू की बहू को घर में रहना मुश्क़िल हो गया. उसे मिलती थीं सास की मीठी झिड़कियां और पतिदेव को मिलता था रूखा-सूखा भोजन.

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनाई. पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे

दूध में औटाए गए, सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भरकर कटोरा कमरे के एक ऐसे ऊंचे ताक पर रखा गया, जहां बिल्ली न पहुंच सके. रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गई.